निराकार शिव और साकार शंकर की अव्यक्त मूर्ति-शिवलिंग

डी.वी.डी. नं. 378 वी.सी.डी. नं. 2309 ऑडियो नं. 2795 मु.ता. 5.11.66

आज का प्रातः क्लास है- 05.11.1966। पहले पेज के मध्यादि में बात चल रही थी कि इस दुनिया के मनुष्य तो सभी कहते हैं कि भ्रष्टाचारीपने से मुक्ति कैसे हो, मुक्त कैसे बनें? एम-ऑब्जेक्ट है ही स्कूल में बहुत अच्छी, समझाने की एम-ऑब्जेक्ट है और बाबा ने रात में भी समझाया- जो कोई भी आते हैं समझने के लिए, उनको पहले-2 ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त का परिचय दो। कौन है ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) जो भ्रष्ट आचरण से बिलकुल परे है, वो ही भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकता है। गाया भी जाता है- 'ऊँचा तेरा धाम, ऊँचा तेरा नाम, ऊँचा तेरा काम।' कहाँ काम करता है? ऊँचे-ते-ऊँचे सत् धाम में काम करता है क्या? सत् धाम, जहाँ सत् आत्माएँ रहती हैं; जहाँ पंचभूत और पंचभूतों के बने शरीर नहीं होते हैं, वहाँ काम करता है? उस ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त का पूरा परिचय देना चाहिए- क्या काम के आधार पर नाम है और काम कौन-से धाम में आकर करता है और वहाँ उसका रूप क्या है जहाँ काम करता है। गुण क्या हैं? सारा परिचय देना चाहिए।

त्रिमूर्ति के चित्र में वो ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त का चित्र भी दिया हुआ है। कौन-सा चित्र है- त्रिमूर्ति के चित्र में? अरे! (किसी ने कहा- शंकर का) शंकर का चित्र है! कहा तो ये गया है कि ब्रह्मा-विष्णु-शंकर इनकी जयंती भी 'वर्थ नॉट ए पैनी' है। जयंती और अंत में पूरी जय-2 कार, ऐसी जय-2 कार होती है जो सारी दुनिया में उसके यादगार चित्र बनाए जाते हैं। भले वो विचित्र है, चित्र से विपरीत कहा जाता है, फिर भी उसका चित्र भी है और विचित्र भी है। बताओ, त्रिमूर्ति में उस ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त का कौन-सा चित्र है? अच्छा! यहाँ भक्तिमार्ग में उसका क्या यादगार है? यादगार तो सम्पूर्णता का ही बनता है; अधूरे रूप का तो यादगार नहीं बनता और उसके सम्पूर्ण रूप का आदेश क्या है? आदेश है 'मन्मनाभव', जो कि मनुष्य-सृष्टि के बाप द्वारा ही दिया जाता है। उनको भगवान कहा जाता है। 'उनको' कह करके दूर कह(कर) दिया। इनको नहीं जो तथाकथित बेसिक नॉलेज लेने वाले ब्रह्माकुमार-कुमारी समझते हैं। किनको समझते हैं? ब्रह्मा को समझते हैं, जो ब्रह्मा बाजू में ही बैठा हुआ है। तो इनको नहीं कहा जाता है । क्यों दूर कर दिया और दूर भी कर दिया तो 'उसको' क्यों नहीं कहा? 'एक' को क्यों नहीं कहा? 'उनको' माने एक से ज़्यादा या एक? (किसी ने कहा-एक से ज़्यादा) जबकि उनके जो नीचे हैं, ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त के जो नीचे हैं, उन तीनों को भी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर कहते हैं। कौन है वो जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है और ब्रह्मा-विष्णु-शंकर उसके नीचे हैं? यहाँ तो मनुष्य कहते हैं त्रिमूर्ति शिव। कहते तो हैं; परन्तु जानते नहीं हैं कि वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त कौन है।

वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त, अभी वो ही भगवन्त कहते हैं जो ऊँचे-ते-ऊँचा है। 'कहते हैं' माने ऊँचे-ते-ऊँचे धाम, सत् धाम, परमधाम में बैठ कर कहते हैं? वहाँ आवाज़ होती है कि वाणी से परे धाम है? (किसी ने कहा-परे धाम है) तो वहाँ तो नहीं कहते होंगे। कहते नहीं होंगे कि मुझे याद करो। सत् धाम में बैठकर कहते होंगे कि मुझे याद करो? उनको वहाँ मुख होता है; हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान होते हैं? वहाँ तो

नहीं होते। तो दुनिया में जो यादगार बनती है वो परमधाम के रूप की यादगार बनती है या कोई और देश है जहाँ बैठकर कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे? निराकार धाम में जो रूप है, उसे याद करने से पावन नहीं बनते हैं। जैसे (कोई) मुसलमान कहते हैं-''अल्लाह मियाँ अर्श में रहता है, फर्श में नहीं रहता।'' तो क्या मुसलमान और उनका धर्मपिता उस निराकारी धाम में रहने वाले, अर्श में रहने वाले को याद करने से पावन बन जाते हैं, पावन बनकर पावन दुनिया स्वर्ग में आते हैं? (किसी ने कहा- नहीं) तो बताओ, कौन कहते हैं, कहाँ कहते हैं कि मुझे याद करो? मुझे याद करते हैं तो पावन बन जाते हैं, कोई नहीं बताता। (किसी ने कहा- साकार में पार्ट बजाते हैं।) (किसी ने कहा- साकार दुनिया में साकार में)

वो निराकार ज्योतिबिन्दु साकार दुनिया में आकर मुख से कहते हैं। मुख भी तो एक इन्द्रिय है ना! मुख से ही ज्ञान सुनाया जाता है। तो ये ऊँचे-ते-ऊँची बात ज्ञान की कहते हैं कि 'मुझे याद करो'। कहने वाली आत्मा कौन है? (किसी ने कहा- शिव) (किसी ने कहा-शिवबाबा) आत्मा तो ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त की ही है; परन्तु ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त को मुख नहीं है। तो किसका आधार लेते हैं? (किसी ने कहा- साकार का) जिसका आधार लेते हैं, उसका नाम क्या रखते हैं? (किसी ने कहा- प्रजापिता ब्रह्मा) ब्रह्मा नाम रखते हैं? परन्तु ब्रह्मा तो बहुतों के नाम हैं। कौन-से ब्रह्मा के द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो? (किसी ने कहा- प्रजापिता ब्रह्मा) एक को याद करो या जितने भी नामधारी ब्रह्मा हैं, जो विष्णु या विष्णु की भुजाएँ बनते हैं, सहयोगी भुजाएँ, उन सबको याद करो? (किसी ने कहा- एक को) तो वो एक ब्रह्मा कौन? प्रजापिता ब्रह्मा। प्रजापिता ब्रह्मा मनुष्य-सृष्टि का बाप है? सारी मनुष्य-सृष्टि पतित है या पावन है? (किसी ने कहा- पतित है) सब पतितों का बाप है। तो सबसे जास्ती पतित-से-पतित बाप होगा कि पावन होगा? (किसी ने कहा- पावन) पावन, प्रजापिता ब्रह्मा? वो पतित है। तो पतित कैसे कहेगा कि मुझे याद करो? (किसी ने कहा-पावन बनकर) पावन बनकर कहता है? तो जब पावन बनता है तो उस पावन का पावन रूप भी बनता होगा कि पतित रूप होगा? (किसी ने कहा- पावन रूप) तो वो पावन रूप कौन-सा है जिसको ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त कहा जाता है? क्योंकि ऊँच-ते-ऊँच और नीच-ते-नीच कहाँ गाया जाता है? (किसी ने कहा- साकार सृष्टि पर) सत् धाम की तो बात नहीं, ये तो साकार सृष्टि की बात है, जहाँ ऊँच-ते-ऊँच देवताएँ भी होते हैं, विकारी मनुष्य भी होते हैं, पतित कर्म करने वाले राक्षस भी होते हैं और इसी सृष्टि पर भगवान भी होता है, जिसे ऊँच-ते-ऊँचा भगवन्त कहा जाता है। तो उस ऊँच-ते-ऊँचे भगवन्त की यादगार कोई होगी या नहीं होगी? (किसी ने कहा- होगी) क्या यादगार है? शिवलिंग।

तो त्रिमूर्ति के चित्र में क्यों नहीं बताया कि ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त कौन है? कौन है- ब्रह्मा-विष्णु-शंकर? देव ब्रह्मा, देव विष्णु और उनसे भी ऊँचे महादेव शंकर? वो भी नहीं। तो कौन है? (किसी ने कहा- शिवबाबा) शिवबाबा? जो ब्रह्माकुमारियाँ चित्र में दिखाती हैं कि पहले-2 इस चित्र का परिचय देना चाहिए। लिंग दिखा दिया और उसके 32 गुण दिखा दिए। कहती हैं कि ये निराकार के गुण हैं। अब गुण या अवगुण साकार में होते हैं या निराकार में होते हैं? (सभी ने कहा- साकार में) तो वो कौन है- साकार है या

निराकार है या आकारी है या तीनों ही नहीं है? साकार को याद करें, निराकार को याद करें या आकारी को याद करें? (सभी ने कहा-साकार में निराकार को) क्योंकि पतित भी तब बनते हैं जब कम-से-कम दो का (आपस में) संग होता है या अकेले पतित बनते हैं? (किसी ने कहा- जब दो का संग हो) प्रवृत्ति में पतित बनते हैं और प्रवृत्ति में पावन भी बनते हैं। तो जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है वो प्रवृत्तिमार्ग की याद सिखलाएगा या निवृत्ति की याद सिखलाएगा? (किसी ने कहा- प्रवृत्ति की) प्रवृत्ति की याद क्या है? (किसी ने कहा- अर्धनारीश्वर) अर्धनारीश्वर- आधा पुरुष, आधा स्त्री? (आत्मा परम पुरुष और देह रूपा प्रकृति का पुतला स्त्री)

जो पतितों को पावन बनाने वाली आत्मा है वो पावनधाम से आती होगी, पावनधाम से आकर पतित दुनिया में पार्ट बजाती है। ज्ञान सुनाने के लिए मुख से पार्ट बजाएगी तो भी पतित दुनिया में ही बजाएगी। तो ये कैसे कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे? 'मुझे' एक के लिए कहा जाता है या दो के लिए, चार के लिए कहा जाता है? (किसी ने कहा- एक के लिए) तो कौन है वो? (किसी ने कहा- साकार में निराकार) साकार में निराकार! माना एक साकार आत्मा, एक निराकार आत्मा। तो दोनों में कौन कहता है- मुझे याद करो? (किसी ने कहा- शिव बाप) निराकार कहता है जो सदा निराकार है? निरंजन, निराकार है वो कहता है? (किसी ने कहा- साकार की तरफ से बोलता है।) आत्मा कौन-सी कहती है मुझे याद करो? शिव की आत्मा कहती है मुझे याद करो। डकैत को याद करेंगे तो डकैत बनेंगे, चोर को याद करेंगे तो चोर बनेंगे। शिव की आत्मा निराकार, तो क्या बनेंगे? निराकार बनेंगे। शिव की आत्मा 5000 वर्ष तक परमधाम में पड़ी रहती है। तो हमारी निराकार आत्मा कहाँ पड़ी रहेगी? (किसी ने कहा- परमधाम में) मंजूर है? (किसी ने कहा- नहीं...तो निराकार साकार में आता है ना!) आते तो हैं; लेकिन कहते कौन हैं मुझे याद करो? (किसी ने कहा- शिव बाप) अरे, कहने वाली एक आत्मा होगी या दो आत्माएँ साथ-2 गीत गाएँगी- मुझे याद करो, दो तरह की आवाज़ निकालेंगी! (किसी ने कहा-राम वाली...)(किसी ने कहा-मनुष्य-सृष्टि का बाप कहते हैं कि मुझे याद करो; क्योंकि इस सृष्टि पर सदा कायम जो है, वही रहती है।)

एक नई बात बता दी कि इस सृष्टि पर सदा कायम कोई चीज़ नहीं है, सदा कायम एक शिवबाबा ही है। तो जो सदा कायम इस सृष्टि पर शिवबाबा है, वो परमधाम में भी सदा कायम रहता है क्या? बताओ-2, जल्दी बताओ! (किसी ने कहा- नहीं रहता है) परमधाम में तो नहीं रहता है, वो तो इस सृष्टि पर सदा कायम रहता है। जिसके लिए गीता में भी बोला है-''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।'' (गीता 2/16) जो सत् है उसका इस सृष्टि पर कभी अभाव नहीं होता और जो झूठा है वो आज है; कल नहीं होगा। जैसे भारत-खण्ड है, इस सृष्टि पर सदा है या कभी लोप हो जाता है? सदा है। और दूसरे धर्मखण्ड हैं, चीन, जापान- बौद्धी धर्मखण्ड; अफ्रीका, अरब देश- इस्लामी धर्मखण्ड; यूरोप, अमेरिका- क्रिश्चियन धर्मखण्ड। आज से 2500 वर्ष पहले इनकी कोई हिस्ट्री नहीं मिलती। क्यों? क्योंकि समुद्र के अंदर समाए हुए थे; जैसे थे ही नहीं। तो सत् हुए या असत् हुए? असत् हुए; और भारत? भारत पहले भी था, सतयुग में भी, त्रेता में भी, द्वापर में भी और कलियुग में भी और अभी संगमयुग में भी है। अंत तक भारत रहेगा या नहीं रहेगा? रहेगा।

दूसरे देश? अंत तक नहीं रहेंगे। संगमयुग के अंत तक दूसरे देश रहेंगे? नहीं रहेंगे। कौन-सा देश रहेगा? भारत देश रहेगा। (चैतन्य भारत भी "हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर" मौजूद रहे ना।)

ये नाम क्यों दिया- भारत देश? ये अविनाशी खण्ड क्यों हुआ, भारत देश? क्योंकि ये भारत खण्ड ही है जहाँ 'भा' माने रोशनी, ज्ञान की रोशनी सदा प्रज्वलित रहती है। 'ज्ञान' माने जानकारी। काहे की (किसकी) जानकारी- झूठ की? नहीं। काहे की (किसकी)? सत् की जानकारी इस भारत खण्ड में सृष्टि के आदि से ले करके अंत तक रहती है; इसलिए ये भारत खण्ड अविनाशी खण्ड है। (1) सत् (मानव आत्मा) का (भी) कभी विनाश नहीं होता। तो जो सत् देश भारत खण्ड है, वो तो जड़ है या चैतन्य है? (किसी ने कहा- चैतन्य है) तो जड़ कहता है? (किसी ने कहा- चैतन्य) जड़ तो बोलेगा कैसे? आवाज़ ही नहीं करेगा। चैतन्य की भी भगवान ने परिभाषा बताई है। क्या परिभाषा बताई है? बोलते-चालते को चैतन्य कहा जाता है। "तुम तो चेतन, बोलते-चालते हो।" (मु.ता.1.7.64 पृ.2 अंत) तो ज़रूर भारत खण्ड में कोई आत्मा है जो सृष्टि के आदि से ले करके अंत तक बोलती-चालती ही है, मुख वाली है, ज्ञान सुनाने वाली है। 'भा' माने 'ज्ञान की रोशनी', 'रत' माने लगा रहने वाला। चाहे सतयुग हो, त्रेता हो, द्वापर हो, कलियुग हो, ऑलराउण्ड पार्टधारी ऐसा है जो ज्ञानयुक्त ही है। सतयुग में देवता है तो भी ज्ञान का जो सार है- 'मैं आत्मा ज्योतिबिन्दु', उस रूप में टिका रहता है या नहीं? (किसी ने कहा- टिका रहता है) त्रेता में भी, द्वैतवादी द्वापरयुग जब आता है, जहाँ दो-2 धर्म, दो-2 राजाएँ, दो-2 राज्य, दो-2 कुल, दो-2 मतें हो जाती हैं, दो-2 भाषाएँ हो जाती हैं, तो भी ज्ञान की रोशनी में टिका रहता है या अज्ञान युक्त हो जाता है? टिका रहता है। किस रूप में? सतयुग-त्रेता में तो देवता के रूप में और द्वैतवादी द्वापरयुग में किस रूप में टिका रहता है? अरे, वो चैतन्य जो आत्मा है, उसका कोई रूप होगा या नहीं होगा? कोई रूप नहीं? (किसी ने कहा- मनुष्य रूप) मनुष्य रूप! कौन-सा मनुष्य रूप? (किसी ने कहा- राजा विक्रमादित्य) राजा विक्रमादित्य?

बाबा ने तो बोला है- "भगवान कहते हैं कि द्वैतवादी द्वापरयुग से जो भी राजाएँ होते हैं वो सब बुद्धू होते हैं, विकारी होते हैं।" उनकी बुद्धि कैसी होती है? विकारी होती है। द्वापरयुग के राजाओं का गायन है कि उन्होंने संगम में रह करके तप कर राज पाया, आत्मिक स्थिति की तपस्या करके राज्य पाया। 'तप कर राज' और 'फिर राज कर नर का।' जब राजा बनते हैं द्वापर में, तो नरक में ज़रूर जाते हैं। क्यों भाई! नरक में क्यों जाते? स्वर्ग में क्यों नहीं जा सकते? क्योंकि द्वापरयुग से जो भी इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि धर्मपिताएँ आते हैं, वो नर हैं या स्वस्थिति में रहने वाले सदासत या सदाशिव हैं? नर हैं। तो नर क्या करेगा? आखरीन तो नर नरक ही बनाता है; सदा स्वस्थिति में रहने वाला जो भगवान सदाशिव है वो स्वर्ग बनाता है। तो जो चैतन्य भारत है, वो द्वापरयुग से नर रूप बन जाता है। तो कोई नाम-रूपधारी होगा ना! नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा) कौन होगा? (किसी ने कहा-व्यास)

हाँ, गीता में ही लिखा हुआ है- 'व्यासः प्रसादात्' (गीता 18/75) - व्यास की प्रसन्नता से ये गीता ज्ञान मिला। ये ही वो व्यक्ति है दाढ़ी-मूँछ वाला नर, वो ही ब्रह्मा है परंब्रह्म नाम-रूपधारी, जो आत्मा

सतयुग-त्रेता में जन्म लेते-2 द्वापर के आदि में क्या बन जाती है? वि+आस। 'वि' माने विशेष रूप से, 'आस' माने बैठ जाती है। क्या धंधा करने के लिए? क्या विशेष धंधा करने के लिए? (किसी ने कहा- शास्त्र लिखने के लिए) शास्त्रों में तो लिखा है कि लिखने वाले (देहभानी जानवर जैसे) गणेश थे। लिखने वाले गणेश और बोलने वाला व्यास था। जितने भी धर्मपिताएँ आए द्वापर से, उन्होंने अपने धर्मशास्त्र की बातें बोली हैं या लिखी हैं? बोली हैं। कोई भी धर्मपिता ने धर्मग्रन्थ नहीं लिखा- क्राइस्ट ने बाइबिल नहीं लिखी, मुहम्मद ने कुरान नहीं लिखा, गुरुनानक ने 'गुरुग्रन्थ साहब' नहीं लिखा। उनके शिष्यों ने बाद में लिखा-पट्टी की। तो जो बाद में लिखते हैं, वो कुछ गलती कर सकते हैं, मिक्स कर सकते हैं या नहीं कर सकते? (किसी ने कहा- कर सकते हैं) बस, वहीं से मिक्सचैरिटी शुरू होती है और धर्म का/धारणाओं का रूप बदल जाता है। जैसे दूध का भरा हुआ घड़ा हो, उसमें एक बूँद विकारी साँप की डाल दी जाए, साँप बड़ा विकारी होता है ना! तो सारा दूध क्या हो जाएगा? मिक्सचैरिटी से क्या हो जाता है? (किसी ने कहा- विषैला) विष हो जाता है। जिस विष से वैश्य बन जाते हैं, (या) वेश्या बन जाते हैं।

जैसे सतयुग-त्रेता में जो देवी-देवताएँ होते थे वो एक से प्यार करते थे। बाबा ने चित्र बनवाय दिया लक्ष्मी-नारायण का, उनके बच्चों का, राधा-कृष्ण का।"राधा की आँख कृष्ण में डूबती और कृष्ण की आँख राधा में डूबती।" चलो, ये तो ज्ञानेन्द्रियों की बात हुई, श्रेष्ठ इन्द्रियों की बात हुई; लेकिन द्वापरयुग से, जो देवताएँ हैं, वो भ्रष्ट इन्द्रियों से आचरण करने वाले बन जाते हैं या नहीं बन जाते? 'भ्रष्ट' माने 'निचली'। चलो, बन जाते हैं, भ्रष्ट इन्द्रियों से आचरण करते हैं; परन्तु द्वापर हो या कलियुग हो, भगवान बाप कहते हैं- पतित तो सब बनते हैं। देवताएँ पतित बनते हैं कि नहीं? बनते हैं। पतित बनते हैं तो जन्म-जन्मांतर कलाएँ कम होती जाती हैं। हाँ, श्रेष्ठ इन्द्रियों से भी पतित बनते हैं। ज्ञानेन्द्रियों में भी श्रेष्ठ इन्द्रियाँ कौन-सी हैं? (किसी ने कहा- आँखें) आँख से पतित बनते हैं, जो सबसे श्रेष्ठ ज्ञानेन्द्रिय है; तो भी नीचे गिरते हैं, कलाएँ धीरे-2 कम होती हैं। फिर जब और-2 ज्ञानेन्द्रियों से (भी) पतित बनते हैं तो तेजी से कलाएँ कम होती हैं।

ये तो फिर भी श्रेष्ठ (ज्ञान) इन्द्रियाँ हैं; लेकिन द्वापरयुग से जब मनुष्यों का भ्रष्ट इन्द्रियों से पतित होना शुरू हो जाता है और भ्रष्ट इन्द्रियों में भी, इस्लाम धर्म जब आता है, तो (व्यभिचारी) पतितों की इस धर्म में लाम लग जाती है। किस धर्म में? इस्लाम में। लाम लग जाती है माने (भारी) लाइन लग जाती है, पतितों की जनसंख्या बहुत बढ़ जाती है। क्यों? इसलिए कि इस्लाम धर्म वाले और उनका धर्मपिता भ्रष्ट इन्द्रियों से व्यभिचारी भी बनते हैं; भ्रष्ट इन्द्रियों से एक में आचरण करने वाले नहीं बनते, एक से इन्द्रिय का सुख लेने वाले नहीं बनते, उनकी धारणाओं में ये व्यभिचार की नूँध है। अनेकों के साथ पतित बनते हैं। उनके धर्म में आज भी नूँध है- कम-से-कम जीवन में चार तो ज़रूर चाहिए। तो व्यभिचारी हुए ना! और व्यभिचार से विषय-विकार बढ़ेंगे या घटेंगे? (तेजी से) बढ़ते जाते हैं। वो तो हुआ द्वैतवादी द्वापरयुगी दुनिया का/कलियुगी दुनिया का अव्वल नम्बर धर्मपिता (जैसे वे अल्लाह अव्वल दीन मानते हैं)। तो सबसे पावरफुल हुआ ना द्वैतवादी दुनिया में! जब उसका ही ये हाल है तो उसके बाद जो (विदेशी) धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स

आते होंगे, वो ज़्यादा ही विषयी-विकारी बनेंगे, ज़्यादा ही पतित बनेंगे या पावन बनेंगे? ज़्यादा ही पतित बनते हैं। तो जब धर्मपिताएँ ही पतित बनते हैं, तो उनको फॉलो करने वाली प्रजा कहो, रचना कहो, वो भी पतित बनती है; इसलिए ऊँच-ते-ऊँच बाप कहते हैं- मुझे याद करो। मैं उन धर्मपिताओं में से नहीं हूँ। किन धर्मपिताओं में से? जो (बहुत व्यभिचारी और) पतित बनते हैं। तो किसने कहा- मुझे याद करो? बताओ, अरे अब तो बोलो किसने कहा? (किसी ने कहा- शिव बाप ने कहा) शिव बाप ने कहा? शिव बाप जिसकी बिन्दी का नाम 'शिव' है, उस बिन्दी आत्मा ने (अपने मुख से) कहा? (किसी ने कहा- शिवबाबा ने) शिवबाबा ने कहा? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा ने) त्रेता के राम वाली आत्मा ने कहा? गड़बड़-2 करते? कभी कहते एक राम वाली आत्मा ने कहा, कभी कहते शिव बाप ने कहा जिसकी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है, शरीर का नाम होता ही नहीं; क्योंकि उसको शरीर ही नहीं होता। (किसी ने कहा- शिवबाबा ने कहा) शिवबाबा ने कहा, जो इस सृष्टि पर सदा कायम है! तो शिवबाबा नाम कब पड़ना चाहिए? (किसी ने कहा- जब आए तब) जब आए, तो 1936 में आया! कहते हैं 1936 में शिवबाबा आया। तो पतित से पावन बनना शुरू हो गए होंगे! हुए कि नहीं हुए? (किसी ने कहा- नहीं) अरे, अगर पतित से पावन बनना शुरू हो गए, (होते) तो यज्ञ के आदि में ब्राह्मणों की सृष्टि का विनाश क्यों हो गया? शास्त्रों में भी लिखा है- 'ब्रह्मा ने सृष्टि रची, उनको पसंद नहीं आई तो खलास कर दिया।' यज्ञ के आदि में सन् 1936/37 में जो ब्राह्मणों का (असली सूर्यवंशी) संगठन तैयार हुआ था, 1947 से पहले ही वो संगठन पूरा-2 टूट गया या रह गया? टूट गया। नया संगठन शुरू हुआ। हुआ तो ब्रह्मा के द्वारा ही; लेकिन अव्वल नम्बर ब्रह्मा के द्वारा हुआ या नम्बर दो के ब्रह्मा के द्वारा या नम्बर तीन के ब्रह्मा के द्वारा? (किसी ने कहा- नम्बर वन) जो नम्बरवार (संगठित चतुर्मुखी) ब्रह्मा हैं, उनका नम्बर लग गया।

तो दादा लेखराज का नम्बर लगा, 1947 से नया संगठन शुरू हुआ; संगठन का नाम क्या पड़ा? ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। अम्मा के कुमार-कुमारी बने, चलो बड़ी अम्मा ब्रह्मा के कुमार-कुमारी बने। तो कोई पूछेगा- तुम बार-2 अपनी अम्मा का नाम क्यों बताते हो- हम ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। जब पूछा जाएगा तो क्या बताएँगे? ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। लोगों को शक तो होगा ना कि बार-2 अपनी अम्मा का नाम क्यों बताता है, बाप का नाम क्यों नहीं बताता? अरे, बिना बाप के अम्मा पैदा कर लेगी? नहीं। जो सृष्टि होती है वो तो प्रवृत्ति से होती है ना, अकेले से कैसे हो जाएगी! तो जहाँ-2 ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय बन रहे हैं, वहाँ लोगों को शक हो जाता है कि अम्मा का नाम बताते हैं, बाप का नाम नहीं बताते हैं, कुछ विषियस हैं, कुछ-न-कुछ व्यभिचार है। वेश्यालय के वासी हैं या शिवालय के वासी हैं? (किसी ने कहा- वेश्यालय के) विषियस हैं और वेश्यालय के वासी हैं।

तो संगमयुग में स्थापना भी होती है नए संगठन की और फिर विनाश भी होता है। तो बताओ, जो दूसरी बार सन् 1947 में ब्राह्मणों के नए संगठन की दुनिया की स्थापना हुई, उसका विनाश हुआ या नहीं हुआ? (किसी ने कहा- हुआ) हुआ! फोटो खींचो इनका सबका, उन ब्रह्माकुमार-कुमारियों के पास पहुँचे! कब

से विनाश शुरू हुआ? 1976 से। क्यों? (किसी ने कहा- सूर्यवंशी बच्चे एडवांस में आ) इसलिए (सन 1976 से) विनाश शुरू हुआ कि बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाय लिया, जो इस सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप (राम/अर्जुन/आदम/आदिदेवादि नामों वाला) है उसका प्रत्यक्षता वर्ष मनाय लिया। उसका काम क्या है?

सारी मनुष्य-सृष्टि के बाप का काम क्या है? असली काम क्या है? (किसी ने कहा- पतितों को पावन बनाना) उस बाप का जो सन् 1976 से प्रत्यक्ष हुआ, बाप का प्रत्यक्षता वर्ष जिसकी यादगार में मनाया गया, बेसिक ब्राह्मणों ने भी मनाया और एडवांस ब्राह्मण भी मनाते हैं। कौन-सा वर्ष? 1976। तो उस बाप का, जो सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप है, विश्वधर्मों का ग्राण्ड फादर है। और धर्मपिताएँ तो ग्रेट फ़ादर हैं- ग्रेट माने 'महान'; 'ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर' नहीं हैं और वो ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर है, सभी धर्मों का ग्राण्ड फादर है। धर्मपिताओं का भी क्या है? बाप है। धर्मपिताएँ भी ऐडम/आदम/आदिदेव को मानते हैं या नहीं मानते हैं? (किसी ने कहा- मानते हैं) तो मानते हैं; सृष्टि के आदि में मानते हैं या मध्य-अंत में मानते हैं? उनकी बुद्धि में कब की बात बैठी हुई है ऐडम/आदम (को लेकर)? पतित सृष्टि के आदि की बैठी है ना!

तो वो ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर, जो सारी 500/700 करोड़ मनुष्य-सृष्टि का बाप है, वो बाप कहते हैं कि मुझे याद करो। माना जिस बिन्दी का नाम 'शिव' है, उसको शरीर है ही नहीं। उसकी आत्मा रूपी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है, वो नहीं कहते? अरे, चुप! (किसी ने कहा- आत्माओं का) आत्माओं का बाप नहीं कहते- मुझे याद करो? (किसी ने कहा- आत्मा के बाप को ही याद करो, कहते हैं।) वो कहते हैं, मुख है उनको? (किसी ने कहा-प्रजापिता के मुख से कहते हैं ना!) प्रजापिता के मुख से कहते हैं ना, तो दो हुए ना! (किसी ने कहा- बात एक ही है) (पर्सनालिटी रूप में) बात एक ही है! माने एक ही आत्मा है? (किसी ने कहा- है) अच्छा बताओ, एक ही आत्मा कैसे? (किसी ने कहा- बाप समान स्टेज बन जाती है ना) हाँ, कि जिस मुख से कहते हैं, उस मुखधारी आत्मा की, उस शरीरधारी आत्मा की स्टेज कैसी बन जाती है? जब बाप समान बन जाती है तब की बात है। बाप नहीं बन जाती है। क्या बन जाती है? बाप समान (निराकारी...) बन जाती है।

जैसे हिस्ट्री में राजाएँ हुए, राजाओं के बड़े-छोटे बच्चे भी होते थे, तो राजाई किसको देते थे? बड़े बच्चे को। तो ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? संगमयुग में भगवान से शुरू हुई। "भगवान जो कर्म करते हैं, सारी दुनिया को वो ही कर्म करने पड़ते हैं।"- गीता में ऐसे लिखा हुआ है। (गीता 3/23) तो भगवान निराकार को भी, भगवान साकार को भी कहा जाता है। ''सगुणहि-अगुणहि नहीं कछु भेदा।'' 'सगुण' माने 'साकार', 'अगुण' माने 'निराकार'- इन दोनों में कोई भेद नहीं है, दोनों ही एकाकार हो जाते हैं। जब एकाकार हो जाते हैं तो नाम पड़ता है- शिव-शंकर भोलेनाथ। एक का नाम पहले, एक का नाम बाद में क्यों, जब एकाकार हो गए? एकाकार क्यों? (किसी ने कहा- बाप का नाम) नहीं! ज़रूर उन दोनों में एक रचयिता है और एक रचना है। (ये भी देखना है)

जो शिव बाप है, जब परमधाम से आते हैं, तो वो बाप; किसके पीछे आते हैं? उनकी बुद्धि रूपी आत्मा किसके पीछे भागती है? मनुष्य-सृष्टि के बाप के पीछे भागती है। आत्मा के पीछे भागती है ना! तो

वो आत्मा शिव बाप, जो परम पुरुष कहा जाता है। 'पुरुष' माने आत्मा। कैसी आत्मा? परम, बड़े-ते-बड़ी शक्तिशाली आत्मा, सर्वशक्तिवान आत्मा। वो परमपिता जिसका कोई पिता नहीं, वो किसके पीछे भागता है? मनुष्य-सृष्टि के बाप के पीछे भागता है। तो कौन आशिक़ हुआ और कौन माशूक़ हुआ? शिव बाप आशिक हुआ और जिसके पीछे भागा, वो माशूक़ हुआ। तो दुनिया में भी क्या होता है? जब सृष्टि प्रक्रिया शुरू होती है तो यहाँ से शुरू होती है, एक आशिक़ बनके पीछे-2 भागता है। किसके पीछे भागता है? माशूक़ के पीछे भागता है। तो गीता में लिखा हुआ है- ''ममवर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।'' (गीता 3/23) 'वर्त्मा' माने 'मार्ग'। दुनिया में जो भी मनुष्यमात्र हैं, वो मेरे मार्ग का ही अनुगमन करते हैं। (त्रिदेव=ओंकारनाथ=शंकर महादेव के) जिस रास्ते पर मैं चला हूँ, उसी रास्ते पर सारी दुनिया चलती है।

तो वो सुप्रीम फ़ादर, सर्व शक्तियों की सुपरमेसी जिसमें है, वो जिस माशूक़ के पीछे भागता है, तो दोनों में पावरफुल कौन है- जिसके पीछे भागता है वो या जो भागने वाला है वो? (किसी ने कहा- भागने वाला) वो (परंब्रह्म ही) पावरफुल है। तो एक के पीछे दूसरा भागेगा- एक माशूक़ है, एक आशिक़ है। आशिक़ पावरफुल होता है, तो माशूक़ को पकड़ेगा या छोड़ देगा? पकड़ेगा ना! पकड़ लेता है। कैसे पकड़ता है? बिन्दु-रूप आत्मा को पकड़ता है या शरीर को पकड़ लेता है? (किसी ने कहा- शरीर को पकड़ लेता है) (अर्जुन के) शरीर रूपी रथ को कण्ट्रोल कर देता, उसे (अबला) माता बनाय लेता है।

धरणी को माता कहा जाता है, जो धारण करती है। किसको धारण किया? सर्वशक्तिवान को धारण कर लिया। जैसे दिखाते हैं भक्तिमार्ग में, रामायण में कि शिव का धनुष था, सीता के घर में रखा हुआ था। उस शिव के धनुष को सीता ने धारण कर लिया जिसको 'चाप' भी कहा जाता है । "शंकर चाप जहाज, जेही चढ़ि उतरैं पार नर।" माने शंकर का शरीर रूपी चाप कहो, शरीर रूपी रथ कहो, वो जहाज के मुआफ़िक है, (संसार रूपी विषय-सागर का) बड़ा जहाज। शास्त्रों में उसका नाम है- 'चंद्रकान्त-वेदान्त जहाज', 'जेही चढ़ि उतरैं पार नर'। जिस पर चढ़ करके मनुष्य संसार-सागर, जो विषय (विकारों का) सागर है, उससे पार चले जाते हैं कि डूब जाते हैं? पार चले जाते हैं। दूसरे गुरुओं ने भी ऐसे ही लिख दिया- 'नानक चाप जहाज।' नानक ने अपने को 'चाप' बताय दिया। तो मनुष्य गुरु तो चाप नहीं हैं, ऐसे रथ नहीं हैं। 'चाप' धनुष को भी कहा जाता है। उसको (पुरुषार्थ में) जितना खींच के लचीला बनाना चाहो, मोड़ सकते। तो वो शरीर रूपी रथ ऐसा है कि पुरुषार्थ के रास्ते में बहुत मुड़ जाता है। (नाजुक नारी जैसा) लचीला है या टाइट है? (किसी ने कहा- लचीला है)

पुरुषार्थ के रास्ते में वो जितना लचीला है, जिस लचीलेपन के कारण ही शिव बाप उस रथ का आधार लेते हैं। क्यों? क्योंकि नई दुनिया की स्थापना करनी है और पुरानी दुनिया का (किसी ने कहा- विनाश)। तो ये छोटा-मोटा काम है क्या? (किसी ने कहा- बड़ा काम) चलो, स्थापना कर भी ली! जैसे धर्मपिताएँ अपने धर्म के संगठन की स्थापना कर लेते हैं; परन्तु क्या नई (परंपराओं वाली) दुनिया की राजधानी भी स्थापन करते हैं? नहीं करते; और भगवान को क्या करना है? (किसी ने कहा- नई दुनिया की

स्थापना) पुरानी दुनिया का पूरा विनाश भी करना है, जो (अपने संग रंग लगाए) कोई भी धर्मपिताएँ नहीं कर सके और स्थापना के बाद नई दुनिया की पालना भी करनी है। तीनों काम करने हैं, ऐसा (मार्ग का राही) रथ चाहिए। जिसकी यादगार बनाते हैं- त्रिमूर्ति हाउस। (या त्रिमूर्ति रोड)

कैसा शरीर रूपी घर? त्रिमूर्ति हाउस, जिस (ओंकारनाथ महादेव) में तीनों मूर्तियों का पार्ट बजाने वाली आत्माएँ काम करती हों- चन्द्रमा के रूप में ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा भी प्रैक्टिकल पार्ट बजाने वाला काम करता हो, सदाशिव की आत्मा भी उसमें प्रवेश करके त्रिनेत्री के रूप में कार्य करे और शरीरधारी (प्रैक्टीकल पवित्रता ज्ञानगंगा) की अपनी आत्मा भी उसमें काम करती है(हो)। तो त्रिमूर्ति हाउस हुआ ना! उसकी यादगार में 'त्रिमूर्ति मार्ग' (या हाउस) नाम रखते हैं। कैसा मार्ग? ऐसा परम प्रसिद्ध त्रिमूर्ति मार्ग, ऐसा रास्ता, जिस रास्ते पर दुनिया की सारी मनुष्य-आत्माएँ चलें, उसी रास्ते पर जिस रास्ते पर चलने की उसने परम्परा डाल दी। किसने? (किसी ने कहा- शिवबाबा ने) शिवबाबा का नाम क्या है, जिसमें तीनों की बात आ जाती है? त्रिमूर्ति शिव। वो त्रिमूर्ति शिव जब आता है तो कौन-से हाउस में आएगा- चैतन्य हाउस? जो सृष्टि के अंत में भी त्रिमूर्ति हाउस सौ परसेण्ट, पहला-2 स्थापनाकारी ब्रह्मा-परमब्रह्म और मध्य में पुरानी सृष्टि का विनाश करने वाला शंकर और अंत में जो सृष्टि स्थापन हुई है, विनाश होने के बाद जो भी अच्छे-2 बचे, उस (सूर्यवंशी) संगठन की पालना करने वाला विष्णु भी बनता है। बताओ, कभी सुना कि शंकर जो कहा जाता है, वो ही अंत में त्रिमूर्ति शिव (विष्णु भी) बनता है? आदि में भी, सृष्टि के आदि में, रुद्र-ज्ञान-यज्ञ के आदि में भी क्या था? त्रिमूर्ति हाउस (ॐ निवास बेहद का ही) था, जिस हाउस में शिव बाप (बनियन ट्री की यादगार कलकत्ते से ही) प्रवेश करते हैं।

तो वो कहता है चैतन्य त्रिमूर्ति हाउस कि मुझे याद करो। सिर्फ़ निराकार कहता है? नहीं! त्रिमूर्ति हाउस, जिसे कहा जाता है- सम्पन्न। यज्ञ के आदि (ॐ मंडली) में भी वो त्रिमूर्ति शिव उसी त्रिमूर्ति हाउस में प्रवेश करता है और सत् धर्म की स्थापना का कार्य करता है; परन्तु यज्ञ के आदि में (राम/शंकर बाप में) इतना ज्ञान नहीं था। जब ज्ञान ही नहीं था तो सफलता होगी? (किसी ने कहा- नहीं) सफलता नहीं हुई। जिस त्रिमूर्ति हाउस में, राम वाली आत्मा के घर में प्रवेश किया, वो फेल हो गया या पास हुआ? (प्रैक्टीकल कर्म में) फेल हो गया। क्यों? क्योंकि पूरा ज्ञान था ही नहीं।

तो पहली बार ब्राह्मणों के (सूर्यवंशी) संगठन का, ब्राह्मणों की नई दुनिया का विनाश हुआ; और दूसरी बार कब हुआ? (किसी ने कहा- 1976 में) सन् 1976 में ब्रह्मा, जो नामधारी दादा लेखराज की आत्मा थी, उसके द्वारा जो संगठन तैयार हुआ, जिसका नाम पड़ा- ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, उससे पहले जो संगठन था उसका नाम क्या था? (किसी ने कहा- ओम मण्डली) क्यों, वो भी तो ब्रह्मा के द्वारा हुआ! उसका नाम भी तो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पड़ना चाहिए! अच्छा चलो, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पड़ना चाहिए। वो नाम नहीं था, क्या नाम था? ओम मण्डली। एक अक्षर है? तीन अक्षर हैं। तीनों का कम्बिनेशन है या तीनों अलग-2 हैं? कम्बिनेशन है- आ+उ (विष्णु) + म (महेश)।

तो जिस हाउस (अर्जुन/आदम-रथ) में तीनों कार्यों का कम्बिनेशन है, उस हाउस के नाम पर त्रिमूर्ति शिव (+शंकर महादेव) अपना कार्य, नई सृष्टि स्वर्ग का आरम्भ करते हैं। जो आदि सो अंत। वो ही आत्मा, जब नई दुनिया की राजधानी स्थापन होती है, वहाँ भी वो आत्मा (खास) कार्य करती है। कार्य तो वो आत्मा करती है; परन्तु उसमें कार्य करने वाली जो दो और मूर्तियाँ हैं, उनमें से एक मूर्ति पुरुषार्थ में सम्पन्न होकर कार्य करती है या अधूरे से पूर्ण बनने का पुरुषार्थ करने के लिए कार्य करती है? (किसी ने कहा- अधूरे से पूर्ण बनने का कार्य करती है) वो टाइम कौन-सा- 1976? (किसी ने कहा- नहीं) फिर कौन-सा? जो बताया, 'तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में नम्बरवार 40 से 50 वर्ष का टाइम लगता है।'(मु.ता.6.10.74 पृ.2 अंत) तुम बच्चों को, 'इनको' नहीं। किनको? इनके फॉलोअर्स को नहीं, किनको? तुम बच्चों को। इसका मतलब वो टाइम कब शुरू होता है? (किसी ने कहा- 2018) उस टाइम पर वो ही आत्मा, जो त्रिमूर्ति हाउस का कार्य करती है, ऐसे शरीर रूपी घर का कार्य करती है, वो 40 (से 50) वर्ष में सम्पन्न बन जाती है। सम्पन्न बनती है तो नई राजधानी होती है या पुरानी राजधानी होती है? (किसी ने कहा- नई राजधानी)

बाप भी कहते हैं- मैं जब आता हूँ, मेरे आने की जो यादगार है 'महाशिवरात्रि', जब घोर अज्ञान की महान अंधकार की रात्रि (सूर्यवंशियों में भी) होती है, कब? 1936 में भी नहीं, (किसी ने कहा- 2018) 1947 में भी नहीं, 1976 में भी महान अंधकार की रात्रि नहीं होती है; क्योंकि 1976 में भी मेरे बहुत से बच्चे हैं (सूर्यवंशी) रुद्रमाला के मणके, जो मेरे को पहचानते हैं। एक ऐसा टाइम आता है जब दुनिया के 500/700 करोड़ मनुष्य भी अज्ञान-अंधकार में रहते हैं- वे नहीं जानते- मेरा बाप कौन? मैं कौन? और जो ब्रह्मा-पुत्र अपने को कहते हैं, (B.K.अर्थात) ब्रह्माकुमार-कुमारी (दूसरी दुनियाँ) अथवा जो अपने को प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी (P.B.K./न्यूट्रल देश) भी कहते हैं, वो भी अज्ञान-अंधकार में आ जाते हैं, माया उनको भी छोड़ती नहीं।

क्या माया सर्वशक्तिवान है? (किसी ने कहा- नहीं) नहीं? है, तब तो (2500 वर्षीय नारकीय) आधा राज्य बटाए लेती है। 5000 वर्ष की जो (टोटल) दुनिया है, उसमें कितने टाइम का राज्य बटाए लेती है? 2500 वर्ष का राज्य बटाए लेती है। 2500 वर्ष माया-रावण का (नरक का विकारी/हिंसक) राज्य चलता है; लेकिन ऐसी पावरफुल कब बनती है? जब (परा प्रकृति अपरा) प्रकृति से हाथ मिलाती है। 'प्र' माने प्रकृष्ट, 'कृति' माने रचना; जो भगवान बाप की (दो रूपों की) प्रकृष्ट रचना है, (परा) प्रकृति (आदि ल./पार्वती या राधा) कहो, बड़े-से-बड़ी माँ जगदम्बा कहो, उससे हाथ मिलाए लेती है। जगदम्बा का पति कौन? जगतपिता (आदम/प्रजापिता या पति कहो)। तो जगतपिता ठन-2 गोपाल रह गया। माया-रावण ने क्या किया? राम (सागर) की (धरणी) सीता चुराई ली। तो अकेला रह गया या प्रवृत्ति में रह गया? अकेला रह गया। अब अकेला नई सृष्टि स्थापन करेगा? (किसी ने कहा- नहीं) सृष्टि तो तभी तैयार होती है जब दो का मेल हो। तो दो का मेल तो अकेलेपन में होता नहीं।

तो सन् 1976 से नई सृष्टि बनी क्या? (किसी ने कहा- नहीं बनी) नहीं बनी? जो बिन्दु-2 आत्मा समझने वाली आत्माएँ हैं, आत्मा समझकर महामृत्यु के टाइम पर भी बिन्दु आत्मा प्रैक्टिकल में बन जाती हैं, वो बिन्दु-2 आत्मा पुरुष कि स्त्री? पुरुष, जो रुद्र के समान कहे जाते हैं। 'रुद्र' शंकर का (भी) नाम है। वो पुरुष स्वभाव-संस्कार धारण करने वाली आत्माएँ, उनका संगठन बनना तैयार नहीं होता? (किसी ने कहा- होता है) तो ये क्यों कहते हो कि नई दुनिया बनना शुरू नहीं हुई? अरे, नया संगठन बनना शुरू हुआ कि नहीं हुआ? हुआ; लेकिन जो नया संगठन बनना शुरू हुआ, वो सब पुरुष हैं या उनमें से कोई स्त्री (संस्कार का सहनशील) चोला भी है? (किसी ने कहा- सब पुरुष हैं) सब जन्म-जन्मांतर के पुरुष स्वभाव-संस्कार वाले हैं। कठोर हैं या माता की तरह कोमल स्वभाव वाले हैं? कठोर हैं। तो जो कठोर स्वभाव वाले पिता हैं, पुरुष हैं; पुरुष सब दुर्योधन-दुःशासन (वाले) हैं; तो जो दुर्योधन-दुःशासन हैं, बहुत कठोर स्वभाव-संस्कार के हैं, वो देवताई नई दुनिया स्थापन कर सकेंगे? (किसी ने कहा- नहीं) देवताई दुनिया तो बनाए नहीं सकते; क्योंकि देवताएँ तो बहुत भोले-भाले (गौ-स्वभाव के) होते हैं या तीक्ष्ण बुद्धि होते हैं? भोले-भाले बुद्धू होते हैं। सारी (स्वर्ग की) सृष्टि भोले-भालों की, 'भोले बाप के भोले बच्चे'। तो जिन भोले बच्चों को, जब से उन्होंने अपने रूप को पहचाना कि 'मैं (पक्की-2) ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ', बचपन से लेकर उनको (सच्ची गीता) माँ का प्यार मिला ही नहीं कि मिलता है? प्यार के भूखे रहते हैं कि प्यार मिलता है? प्यार के भूखे रहते हैं। तो जिन बच्चों को बचपन से ही माँ-बाप का प्यार नहीं मिलता, वो स्वभाव-संस्कार से कड़क हो जावेंगे या मुलायम स्वभाव-संस्कार के रहेंगे? कड़क स्वभाव-संस्कार के हो जाते हैं।

हाँ, कोई-2 विरले बच्चे हैं, कोटों में कोई-2 हैं, जो अपना पूरा दुर्योधन-दुःशासन पने का पोतामेल भगवान बाप के सामने (नं. वार सच्चाई से) दे देते हैं, कुछ भी छुपाय बग़ैर। तो भगवान बाप को क्या प्रिय है? (किसी ने कहा- सच्चाई) 'गॉड इज़ ट्रूथ' कहा जाता है, सच्चाई को ही गॉड कहा जाता है, 'सत्य ही शिव है'। शिव भगवान क्या है? सच्चाई। जो दिल खोल करके सारी सच्चाई बाप के सामने रख करके एकदम बच्चे के मुआफ़िक नंगे हो जाते हैं, बाप उन सच्चे बच्चों को प्यार करेगा या झूठे बच्चों को प्यार करेगा? सच्चे बच्चों को ज़्यादा प्यार करता है। ऐसे सच्चे बच्चे, सचखण्ड, जिसे सतयुग कहा जाता है, उस युग की स्थापना में सहयोगी बनते हैं और वो बच्चे विरले हैं। कैसे विरले? जैसे गीता में कहा- "मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चित् यतति सिद्धये।" (गीता 7/3) हज़ारों मनुष्यों में, जो भी मनुष्यमात्र हैं, उनमें थोड़े निकलते हैं जो यत्न करते हैं; काहे(किस) के लिए? योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिए और यत्न करने वालों में भी कोई-2 निकलते हैं जो मुझे प्राप्त करते हैं; इसलिए नौ प्रकार के (नौ कुरियों वाले) ब्राह्मण ब्रह्मा के पुत्र गाए हुए हैं। नौ प्रकार के जो आस्तिक धर्म हैं भगवान को मानने वाले, सृष्टि के अंत में भगवान बाप आकर उन धर्मों से उन श्रेष्ठ (बीजरूप रुद्राक्षगण) बच्चों को खींचता है। हर धर्म में अच्छे और बुरे होते हैं कि नहीं? होते हैं। तो जो हर धर्म के अच्छे-ते-अच्छे बच्चे हैं, उन बच्चों को भगवान बाप खींच करके (पहले ब्रह्म+मा=संगठित चतुर्मुखी) ब्रह्मा का पुत्र ब्राह्मण बनाता है; परन्तु जिन-2 धर्मों से खिच करके आए हैं, अनेक जन्मों का संग (के) रंग का

संस्कार-स्वभाव लेकर आए हैं, उस संग के रंग के स्वभाव को कहो, उस संग के रंग के छिलके को कहो, नं०वार छोड़ देंगे या सब एक साथ छोड़ देंगे? अनेक धर्मों के स्वभाव-संस्कार को धारण करने वाले बच्चे अनेक धर्मों से अंतिम जन्म में अलग-2 कुरियों वाले ब्रह्मा के पुत्र बनते हैं। तो उनमें से कौन पहले सुधरेंगे? अच्छा! नौ कुरियों को छोड़ दो, नौ धर्मों को छोड़ दो, सृष्टि रूपी वृक्ष में जो तीन मुख्य तने दिखाए गए हैं- एक ऐसा तना है जो नीचे से ले करके ऊपर तक एक ही धर्म में पक्के रहते हैं वो बच्चे। (किसी ने कहा- सूर्यवंशी बच्चे) दूसरे ऐसे हैं जो मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष में दाईं ओर के भारतीय धर्मों (बौद्धि-संन्यासी-सिख & आर्यसमाजियों) में मुड़ जाते हैं। मुड़ते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- मुड़ जाते हैं) उनमें कन्वर्ट हो जाते हैं। तीसरे ऐसे हैं जो मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष की बाईं ओर की (विदेशी) डालियाँ हैं, बाएँ हाथ वालीं; बायाँ हाथ अच्छा या दायाँ हाथ अच्छा? दायाँ अच्छा और बायाँ (व्यभिचारी वैश्यावृत्ति का) खराब रास्ता; वाममार्गी कहे जाते हैं। वाममार्गी क्यों कहे जाते हैं? क्योंकि उल्टा रास्ता पकड़ते हैं, व्यभिचार का रास्ता पकड़ लेते हैं। इन्द्रियों से क्या बन जाते हैं? व्यभिचारी बन जाते हैं। भारत (पार्वतीया आदि ल.) माता का अनुगमन नहीं करते, जो भारत माता खास 'मातृ देश' गाया जाता है। गायन किसका होता है- भारत माता का कि भारत पिता का? भारत माता का गायन होता है। तो वो बच्चे (प्राय:) जब स्त्री चोला धारण करते हैं तो मोस्टली दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट हो (ही) जाते हैं। दूसरे-2 धर्म की जो नई-2 धर्मपिताओं की आत्माएँ ऊपर से आती हैं ना, तो जो द्वापर से नई आत्माएँ आएँगी, वो सृष्टि-वृक्ष के नए पत्ते देखने में शोभनीक होंगे या भोंड़े होंगे? वहाँ द्वापर से नए-2 (चैतन्य मानवीय) पत्ते होते हैं, बहुत प्यारे लगते हैं। बच्चाबुद्धि कन्याओं को भी और माताओं को भी कैसे लगते हैं? बहुत प्यारे लगते हैं। इतने प्यारे लगते हैं कि वो अपना धर्म ही भूल जाती हैं, आराम से उन आत्माओं के आकर्षण में आ जाती हैं, प्रभाव में आ जाती हैं; और प्रभाव माने? 'प्रभावित' माने प्रजा। उनकी प्रजा बन जाती हैं। पहली-2 प्रजा भी बन जाते हैं। पहली प्रजा कौन होती है? (किसी ने कुछ कहा-...) माता का रूप धारण करके उनकी प्रजा (फालोअर) बन जाती हैं, धर्मपिताओं की प्रजा, उनके फॉलोअर्स की प्रजा। इन सब बातों की शूटिग कहाँ हो रही है, रिहर्सल कहाँ हो रही है? संगमयुग में। जो ऊँच-ते-ऊँच भगवन्त है उसकी प्रजा नहीं बनते हैं, उनकी बातों से प्रभावित नहीं होते, उसके (अति साधारण) रूप को नहीं पहचानते, उसके काम को भी नहीं पहचानते। न पहचानने के कारण जो-2 नए-2 शोभनीक (द्वैतवादी द्वापुर की) बाद वाली आत्माएँ रूपी पत्तियों होती हैं, जो (आत्माएं) सृष्टि रूपी मंच पर (आय) जागृत हो जाती हैं; परमधाम में आत्माएँ जड़ और नीचे आईं, जागृत हो गईं। ऐसे ही यहाँ शूटिग पीरियड में पहले अज्ञानी जड़ (देह बुद्धि समझते) थे, फिर ज्ञान में आए तो जागृत हो गए। अपनी आत्मा को, अपने बाप को सत्वप्रधान स्टेज में पहचाना; लेकिन फिर बाद में क्या होता है? कोई तो उस सात्विक स्टेज में आदि से ले करके अंत तक टिके रहते हैं सत् बाप की याद में या आत्मा की याद में टिके रहते हैं कोई भूल जाते।

ऊँचे-ते-ऊँचा करतार, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त, जिसकी यादगार शिव के मंदिरों में दिखाई जाती है। किसके मंदिरों में? (किसी ने कहा-शिव के) शिव के मंदिर क्यों कहा? कोई जड़ पत्थर के मंदिर जो

बनते हैं, पत्थर की मूर्ति बनती है- लिंग रूप, उसमें वो चैतन्य आत्माओं का बाप (सदा शिव ज्योति) बैठता है क्या? आत्माओं का बाप होता है? होता (भी) है कि नहीं? (किसी ने कहा- होता है) अच्छा! पत्थर की मूर्तियों में, पत्थर (बुद्धि की यादगार) के मंदिर बनाए जाते हैं, उनमें वो चैतन्य बाप आत्मा के रूप में पत्थर में बैठता है? (किसी ने कहा- नहीं बैठता है) अभी तो कह रहे थे! (किसी ने कहा- यादगार) (किसी ने कहा-आत्माओं का बाप) आत्माओं का बाप (पत्थर बुद्धि या बच्चा बुद्धियों में) नहीं बैठता? (किसी ने कहा- यादगार के रूप में बैठता है।) यादगार के रूप में बैठता है? जैसे- सोमनाथ मंदिर में (क्रोधी देहधारी की यादगार) लाल पत्थर था, लिंगाकार। पत्थर था ना! ज़रूर पत्थरबुद्धि अंत तक बना रहा होगा। तो उस पत्थरबुद्धि में हीरा जड़ा हुआ था। कौन जड़ा हुआ था? हीरा। किसकी यादगार? (किसी ने कहा- शिव की यादगार) शिव की यादगार! शिव पत्थर बनता है? हीरे वगैरह तो पत्थर होते हैं। हीरा, पन्ना, मोती- नौ रत्न पत्थर होते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- वो पत्थर होते हैं) वो शिव पत्थर (बुद्धि) बनता है? (किसी ने कहा- नहीं) अरे, तो क्यों कह दिया- जो हीरा है, वो उस (सुप्रीम) आत्मा (शिव) की यादगार है जो हीरे की तरह पत्थरबुद्धि बन जाती है। बताओ, वो हीरा किसकी यादगार है? (किसी ने कहा- शिव बाप) अभी भी शिव बाप की यादगार? शिव बाप, जो (ज्योति रूप) आत्माओं का बाप है, जिसकी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है, वो बिन्दी शरीर में प्रवेश करती है तब अनेक सम्बन्ध और नाम बनते हैं। तो वो (पत्थर) हीरा शिव बाप की यादगार है? (किसी ने कुछ कहा-...) कभी कहते- है, कभी कहते- नहीं। किसकी यादगार है? (किसी ने कुछ कहा-...) फिर वही साकार? हीरा साकार है? हीरे की बात हो रही है। वो हीरा साकार या निराकार? (किसी ने कुछ कहा-...) निराकार की यादगार है, जो सदाशिव ज्योति है! जो निराकारी सदैव रहता है, इस विकारी दुनिया में आता है तो भी निराकारी, साकार शरीर में आता है तो भी निराकारी स्टेज में बुद्धि से ही रहता है, उसकी यादगार है? (किसी ने कुछ कहा-...) हीरा? (किसी ने कहा- उस साकारी सृष्टि के बाप की स्टेज निराकारी बने तो वो हीरा।) हाँ, जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है, जो पत्थरबुद्धि बन जाता है। हाँ, (आदि सो) अंत में पत्थरबुद्धि बन जाता है। जो गायन है भक्तिमार्ग में- जब सतोप्रधान भक्ति थी तो स्वर्ण लिंग बनाते थे। कैसा? बड़ा रूप साकार, सोने का सच्चा रूप धारण करने वाला। फिर बाद में रजत लिंग बनाने लगे चाँदी के, फिर बाद में ताम्र लिंग बनाने लगे और अंत में लौहलिंग, पत्थर लिंग बन गए। तो पत्थरबुद्धि बनता होगा ना! पत्थरबुद्धि तो बनता है, फिर भी हीरा कहा जाता है या हीरा नहीं कहा जाता? (किसी ने कहा- हीरा कहा जाता है) है तो हीरो पार्टधारी; पत्थरबुद्धियों के बीच में भी हीरो पार्टधारी या नीची कोटि का पार्ट बजाने वाला? हीरो पार्टधारी।

"चारों युग प्रताप तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा।" उस हीरो पार्टधारी का चारों युगों में प्रताप है, सारे जगत में उजियारा करने वाला है। सतुयग-त्रेता में आत्मिक स्थिति के रूप में, संगमयुग में भी आत्मिक स्थिति के रूप में; द्वैतवादी द्वापरयुग में आत्मा जो है, 8 कला वाली बनती तो है; लेकिन फिर भी ज्ञान की रोशनी में रहती है या और मनुष्यों की तरह अज्ञान में आ जाती है? ज्ञान की रोशनी के लिए ही बैठती है- 'आस', 'विआस'। ज्ञान के लिए ही बैठी हुई है। तो द्वैतवादी द्वापरयुग में भी जब आत्माएँ विषियस मनुष्य बन

जाती हैं, तो भी उन विषियस आत्माओं के बीच में सबसे जास्ती ज्ञान की रोशनी देने वाली है या नहीं? (किसी ने कहा- है) सबसे जास्ती ज्ञान की रोशनी देने वाला है व्यास और कलियुग में भी भले लोहे का युग आ गया- 'कालायुग', काले कर्मों का युग, झूठखण्ड जहाँ सब झूठ बोलते हैं। नम्बरवार झूठे होंगे या एक जैसे झूठे होंगे? (किसी ने कहा- नम्बरवार) उन नम्बरवार झूठों में कोई अव्वल नम्बर झूठ बोलने वाला भी होगा या नहीं होगा? होगा ज़रूर। तो जो 100% झूठा रह जाता है, वो लोहे का लिंग कहा जाता है- पत्थर लिंग; कालिमा दिखाई देती है। लोहे को जब (योग) अग्नि में डालते हैं, देखा कभी? (किसी ने कहा- हाँ!) लोहे को जब अग्नि में डालेंगे तो कैसा हो जाता है? लाल हो जाता है। तो इसलिए हमारे सोमनाथ मंदिर में या झण्डे में वो जो लिंग रूप की यादगार है, कपड़ा कैसा दिखाया है? लाल दिखाया हुआ है। क्रांतिकारी रंग बन जाता है। और मनुष्य-आत्माएँ भी संगमयुग में भगवान से ज्ञान तो लेती हैं; लेकिन कोई भी आत्मा ज्ञान की (सम्पूर्ण) क्रांति नहीं कर पाती। वो एक ही आत्मा है जो भगवान बाप के ब्रह्मा मुख से दी हुई-वेदवाणी कहो, ज्ञान वाणी कहो-उस वाणी में क्या ला देती है? क्रांति ला देती है। सिर्फ़ ब्रह्माकुमार-कुमारियों में ही क्रांति लाती है या सब धर्मों अर्थात् विश्व-धर्मों में क्रांति ला देती है? दुनिया के सभी धर्मों में क्रांति ला देती है। महामृत्यु का जब समय होता है तो दुनिया की सभी आत्माएँ उस ज्ञान की क्रांति में सराबोर हो करके, ऐसी आत्मिक स्थिति धारण करती हैं कि वो सभी मनुष्य-आत्माएँ जहाँ अव्यक्त शिवलिंग मूर्ति से निकली हैं, वहीं प्रवेश हो जाती हैं।

बताओ, कोई बच्चा है, कहाँ से निकलता है? अरे, कहाँ से जन्म लेता है? माता से जन्म लेता है! माता के पेट में जब आत्मा रूपी बच्चा आता है तो अपने-आप आ गया? माता ने क्रिएट कर लिया? तो कहाँ से आया? अरे, बच्चा कहाँ से आया? (किसी ने कहा- पिता से) माँ से आया? बाप से आया। वो बाप है जो बीज डालता है। बीज 4/5 महीने तक छोटे से बड़ा भ्रूण बनता है, जड़त्व रूप में हाथ-पाँव धारण करता है, जड़त्वमयी इन्द्रियाँ बनती हैं, फिर 4/5 महीने के बाद उसमें सोल प्रवेश करती है। ऐसे ही है ना! तो जब सोल प्रवेश करती है तब कहते हैं- बच्चा पैदा हुआ? नहीं हुआ। ऐसे ही सन् 1976 में वो बच्चा जो आत्माओं के बाप का पहला बच्चा है, कौन? मनुष्य-सृष्टि का बाप, राम वाली आत्मा, नर से नारायण बनने वाली आत्मा, वो अपने स्वरूप में प्रवेश होती है। तो उस समय की प्रवेशता को ये कहा जाता है कि बच्चे ने जन्म लिया? (किसी ने कहा- नहीं) सबसे जास्ती किसको पता चलता है? (किसी ने कहा- माँ को) माँ के पेट में चुर्र-पुर्र होती है तो उसी को पता चलेगा। तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर भी कोई प्रैक्टिकल में माँ का पार्ट बजाने वाली है। जो माँ का पार्ट बजाने वाली है, वो साकार रूप में कोई शरीरधारी भी है। क्या पार्ट बजाती है? जड़ शरीर का पार्टधारी, जड़त्वमयी बुद्धि वाली और उस जड़त्वमयी शरीरधारी में निराकारी चैतन्य आत्मा भी है जो वाचा की देवी वाक्देवी कही जाती है, जगदम्बा सरस्वती कही जाती है। कहते हैं- सीता जब राजा जनक के राज्य में फूलों की वाटिका में गई, तो ये संकल्प लेके आई कि वाटिका में जिसको देखा वही मुझे प्राप्त हो। तो उसने पूजा की, जग जननी की पूजा की- ''जग जननी जै जै, उमा, जग जननी जै जै।'' क्या नाम दिया? उमा।

कौन है उमा? जो सारी सृष्टि की माँ है, सारी मनुष्य-सृष्टि की माँ। जैसे सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप वैसे माँ। वो माँ और बाप जब दोनों मिल करके एकाकार होते हैं तो अर्धनारीश्वर कहे जाते हैं।

तो वो माँ और माया। कौन? माया। माया ज़्यादा बुद्धिमान है या वो जगदम्बा ज़्यादा बुद्धिमान है? माया ज़्यादा बुद्धिमान है। वो किसी को आगे नहीं आने देना चाहती। माया बेटी है ना! तो कभी बुद्धि में आता है- भगवान बाप, कभी कहती है- मायापति। तो कैसी बेटी है? भगवान की बेटी कैसी है? माया, माया बुद्धि में घुसी हुई है- ये मेरा बाप भी है और ये मेरा पति भी है। देखें, मेरे सामने इससे ज़्यादा प्राप्ति कौन करता है? तो किसी को आगे नहीं बढ़ने देती, सबके रास्ते में दीवाल बन करके, विघ्न बन करके खड़ी हो जाती है। कौन-से धर्म का इबादत घर है जो अपने इबादत का स्थान बनाते हैं तो दिवाल खड़ी कर देते हैं? कौन-सा धर्म है? मुस्लिम धर्म/स्लाम धर्म। जिस पूजा-स्थल में वो बैठ करके अल्लाह मियाँ को याद करते हैं, तो सामने किसको रखते हैं? दीवाल को सामने रख देते हैं। वो दीवाल सारी दुनिया के रास्ते में भगवान बाप को पहचानने में दीवाल बन करके खड़ी हो जाती है। समझती है कि सर्वशक्तिवान बाप से सर्वशक्ति का वर्सा मैं लूँगी। मेरे सामने दूसरा कोई सरेण्डर, पूरा सरेण्डर नहीं हो सकता। मैं किसी को सरेण्डर नहीं होने दूँगी। तो बताओ, ऐसी कोई चैतन्य शक्ति है ब्राह्मणों की दुनिया में- है या नहीं है? कौन? (किसी ने कहा- कुमारिका दादी) हैं(हाँ)! एक है जो सब ब्रह्माकुमार-कुमारियों की बुद्धि को मोड़ देती है; लेकिन जो भगवान बाप के आत्मिक स्वरूप धारण करने वाले बच्चे हैं, रुद्र बाप के पक्के-2 रुद्रमाला के मणके हैं, उनकी बुद्धि को नहीं मोड़ पाती; इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला- माया थक चुकी है, माया तंग आ चुकी है। "अभी तो माया भी समझ गई है कि अब हमारा राज्य गया कि गया। ... वह भी ब्राह्मण आत्माओं से, श्रेष्ठ आत्माओं से वार करते-2 थक गई है।" (अ०वा०ता० 14.12.97 पृ०80 अंत) जब ये बोला तब हॉस्पिटलाइज़ हो गई, कोमा में चली गई। आख़रीन जब देखा कि मैं नहीं जीत सकती हूँ तो क्या किया? प्रकृति से हाथ मिला लिया, जो भगवान की प्रकृष्ट रचना है। कैसी रचना? प्र+कृति। 'कृति' माने रचना, 'प्र' माने 'प्रकृष्ट'। बहुत पावरफुल रचना। माया इतनी पावरफुल नहीं है जो भगवान के बच्चों को जीत ले। तो क्या करती है? माया क्या करती है? (किसी ने कुछ कहा-...)

जो रुद्रमाला में माता है प्रकृति- प्रकृष्ट रचना, भगवान की पहली-2 रचना; प्रकृति पहली रचना या लक्ष्मी वाली आत्मा पहली रचना या माया बेटी पहली रचना? प्रकृति पहली रचना; क्योंकि भगवान जब अपना धाम छोड़ करके आते हैं तो किसके पीछे भागते हैं? (किसी ने कहा- मनुष्य-सृष्टि के बाप के पीछे भागते हैं) वो प्रकृति का पुतला नहीं है? (किसी ने कहा- है) नाम ही दिया है- परमब्रह्म। ब्रह्मा नामधारियों में परम है। प्रकृति का पुतला तो है; लेकिन कैसी माता है? (किसी ने कहा- परमब्रह्म) परम रूप वाली, परम सच्चाई को धारण करने वाली, मनुष्य-आत्माओं के बीच में परम कल्याणकारी। कैसी है? बाप परिवार में सबसे जास्ती कल्याणकारी होता है ना! कल्याणकारी है तो वो प्रकृति का पुतला है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) प्रकृति का पहला रूप है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) लेकिन इस दुनिया में, पतित दुनिया में प्रकृति का जो

पहला रूप है, जो बड़े-2 बुद्धिमान हैं, उन बुद्धिमानों के बीच में बुद्धिमान नर सद्भाग्य का अर्जन करने वाला अर्जुन गाया हुआ है। कैसा ज्ञान का अर्जन करने वाला? जिससे जास्ती ज्ञान का अर्जन कोई मनुष्यमात्र नहीं कर सकता। तो चैतन्य भी होगा या पाँच जड़ तत्वों का पुतला मात्र ही होगा? चैतन्य आत्मा है; परन्तु जो उसका पुतला है, वो परमब्रह्म रूपी माता है। जैसे दादा लेखराज का पुतला कैसा था? लम्बा-चौड़ा, गोरा-चिट्टा, आकर्षण मूर्त था या नहीं था? (किसी ने कहा- आकर्षण मूर्त था) तो भगवान जो निराकार ज्योतिबिन्दु है, वो अंदर की चीज़ है या बाहर की चीज़ है? (किसी ने कहा- अन्दर की चीज़ है) अंतर्मुखी है या बहिर्मुखी है? (किसी ने कहा- अंतर्मुखी है) जो अंतर्मुखी होता है वो अंदर को पहले देखता है या बाहर को पहले देखता है? (किसी ने कहा- अंदर को) अंदर को देखा जिसका आधार लिया; परन्तु जिसको देखा वो पहले-2 तो उसका आत्मा रूपी अविनाशी (अव्वल नं.) बच्चा है ना! किसका? सुप्रीम सोल का बड़ा बच्चा है ना!

तो जो बड़ा बच्चा है- साकार है या निराकार है? साकार है। साकार बच्चे के लिए बाप की आस क्या होती है? (किसी ने कहा- बाप की दुकान सम्भाले) और? (किसी ने कहा- बाप समान बने) हाँ, बाप जो है, शांति का सागर गाया हुआ है, सुख का सागर गाया हुआ है, तो बच्चा भी जन्म-जन्मांतर कैसी स्थिति में रहे? हर बाप क्या चाहता है? मेरे बच्चे जन्म-जन्मांतर के लिए सुखी रहें या अशांत-दुखी रहें? (किसी ने कहा- सुखी रहें) ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? (किसी ने कहा- संगमयुग में) संगम में सुप्रीम बाप आते हैं, जिस आत्मा को अपना बड़ा बच्चा समझते हैं, उस बच्चे के लिए आस रहती है कि बच्चा सुखी रहे। सुखी निवृत्ति में रहेगा या प्रवृत्ति में होने के बाद जास्ती सुख रहेगा? (किसी ने कहा- प्रवृत्ति में) तो दुनिया के बाप क्या करते हैं? अरे बताओ! अपने बड़े बच्चे के लिए क्या करते हैं? प्रवृत्ति तैयार करते हैं ना! प्रवृत्ति में रहना कम्पल्शन कर देते हैं । तो शिव बाप भी अपने बड़े बच्चे के लिए यही चाहता है कि बच्चा जन्म-जन्मांतर सुखी रहे; और जो सुख है, वो ब्रह्मचर्य में जब तक रहता है, तब तक जास्ती सुख है या प्रवृत्ति में रहने के बाद सुख होता है? प्रवृत्ति में रहने के बाद ही सुख होता है। चाहे देवताएँ हों, चाहे मनुष्य हों, चाहे राक्षस हों, निवृत्त रहेंगे तो सुख महसूस करेंगे? (किसी ने कहा- नहीं) उतना सुख महसूस नहीं कर सकते। तो वो बाप की भी आस है कि बच्चा सुखी रहे।

तो बच्चा जो है, मनुष्य-सृष्टि का पिता है, साकार पिता है। तो साथी भी कैसा चुनेगा? साकार चुनेगा। तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ऐसा साथी चुनता है जो साथी कभी भी पक्का-2 निराकारी रूप धारण नहीं करता है। अंत में क्या रूप बन जाता है स्त्री चोले का- अबला या सबला? (किसी ने कहा- अबला) ऐसी जड़त्वमयी तत्वों वाली आत्माओं को चुना, जो आत्माएँ बाप को पहचान करके भी फिर बाप को भूल जाती हैं। उनको जड़त्वमयी बुद्धि वाला कहें या चैतन्य बुद्धि कहें? जड़त्वमयी बुद्धि वाली। तो उनमें नम्बर वन आत्मा कौन है? (किसी ने कहा- जगदम्बा) जगदम्बा का साथ देता है। पहले-2 वाक् देवी कही जाती है। बाप की बच्ची का नाम? (किसी ने कहा- वाक् देवी) वाक् देवी कौन, वाचा/वाणी की देवी? जगदम्बा। सरस्वती-जगदम्बा कहते हैं ना! तो वो जगदम्बा को चुनता है वाचा चलाने के लिए, वाचा चलाने वालों की वाक् देवी बनाने के

लिए। और कोई भी मनुष्य-आत्मा इस सृष्टि पर नहीं है जो ब्रह्मा के साक्षात्कारों को वाचा के द्वारा मनुष्य-सृष्टि के बाप के सामने रख सके। इतनी हिम्मत कोई नहीं करती। ये सारी वसुधा में जितने भी मनुष्यमात्र हैं, वो सब 'वसुधैव कुटुम्बकम्', वसुधा रूपी कुटुम्ब/परिवार के भांती हैं; लेकिन उनमें से कोई भी इतनी हिम्मत नहीं कर पाता। जिसको साक्षात्कार हुआ वो भी हिम्मत नहीं कर पाता कि सामने जा करके वो अपना अनुभव सुनाए। वाचा से जैसा दादा लेखराज के द्वारा सुना है वैसा ही हूबहू सुनाए देती है। सुनाती है और फिर सुनती भी है। साक्षात्कारों को सुनाती भी है और फिर जिसको सुनाती है, वो उसके सुनाने के साथ-2 सुनता भी है और समझता भी है। वो खुद समझता है कि उससे भी ज़्यादा समझ कोई और आत्मा में है? (किसी ने कहा- कोई और आत्मा में है) कौन? शिव।

मनुष्य-सृष्टि में वो (मनुष्य-सृष्टि का बाप) सबसे जास्ती समझू है, बुद्धिमान है, बुद्धिमान नर अर्जुन गाया हुआ है; लेकिन उससे भी जास्ती बुद्धिमानों की बुद्धि कौन गाया हुआ है? (किसी ने कहा- शिव) तो वो उसमें प्रवेश कर जाता है। शिवबाप सृष्टि रचने के लिए माता में प्रवेश करता है। बाप की जो मूल शक्ति है, उसे कहा जाता है 'सत्व' और उस सत्व (सत् ज्ञान) को धारण करने वाली जो सच्ची माता है, उसे कहा जाता है 'सती'। तो जो सत्व को धारण करने वाला बाप शिव है, वो सदा सत् बाप उस सत्त्व माने ज्ञान के बीज को माता में धारण कराता है। जिसको कहा है- मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ, 'परमब्रह्म'। समझने और समझाने के लिए प्रवेश करता है; और पहले-2 सुनता कौन है ? (किसी ने कहा- प्रजापिता) नामधारी परमब्रह्म सुनता है? जो शिव ने ज्ञान का बीज डाला, उसको तो मुख से ही सुनाया जाएगा। तो मुख से जो सुना हुआ है वो सबसे पहले कौन सुनता है? (किसी ने कहा- माता सुनती है) वो माता, जो बड़बोली है, वाक् देवी, वाचा की देवी, वो सुनती भी है और दूसरों को सुनाती भी है। तो वो ही है प्रकृति, जगतपिता/जगतपति की पहली रचना- जगदम्बा।

उस पहली रचना को माया हाथ कर लेती है, हाथ मिलाए लेती है। उसका बुद्धि रूपी हाथ अपने बुद्धि रूपी हाथ में जकड़ लिया। क्यों? जब परमपिता की रचना-प्रकृति सबसे पावरफुल है, तो उसको माया ने हाथ क्यों कर लिया? (किसी ने कहा- आगे आने के लिए) पावरफुल तो है; लेकिन पंचतत्वों से बने जड़ शरीर के आधार पर पावरफुल है या आत्मिक रूप में पावरफुल है? (किसी ने कहा- जड़ शरीर के आधार पर) पंचभूतों का पुतला है नम्बर वन साकार में जगदम्बा; इसलिए जगदम्बा के जो चित्र देखे होंगे, देखे कभी? बंगाल में देखना। कैसे बनाते हैं- सुन्दर या भोंडा चेहरा? बहुत सुन्दर चेहरा दिखाते हैं, बड़ी-2 आँखों वाला। तो दिखाया है कि वो पंचभूतों से बना हुआ जो प्रकृति का साकार चोला बहुत सुन्दर, वाचा के आधार पर भी बहुत सुन्दर और शरीर के आधार पर भी, पंचतत्वों के आधार पर भी बहुत सुन्दर। उस माता को साकार ने क्या बनाया? पहली साकार रचना बनाया। प्रकृति का जो पावरफुल रूप है जगदम्बा, उसको जड़त्व बुद्धि वाला आधार बनाया। किस बात के लिए आधार बनाया? सृष्टि रचने के लिए। तो जो सृष्टि रची जाती है, वो सृष्टि

पहले जड़ रची जाएगी। चैतन्य आत्माओं के बीच में सबसे पावरफुल चैतन्य मानवी आत्मा कौन ? (किसी ने कहा- मनुष्य-सृष्टि का बाप)

आत्माओं का बाप पहले आत्माओं को ज्ञान-दान दे करके रचता है, ज्ञान ले करके आत्माएँ पहले तैयार होती हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश- ये जड़ हैं, ये तो ज्ञान लेने वाले नहीं हैं; लेकिन जो भी जड़त्वमयी आत्माएँ हैं, जैसे- जानवर, पशु-पक्षी; जड़त्वमयी तो हैं; वो अपने हित-अनहित को पहचानते हैं या नहीं? (किसी ने कहा- पहचानते हैं) ''हित-अनहित पशु-पक्षियु जाना, मानस तन गुण ज्ञान निधाना।'' क्यों ये अंतर है? पशु-पक्षियों की जड़त्वमयी बुद्धि है और मनुष्य की चैतन्य बुद्धि है। मनुष्य सर्वोपरि प्राणी है, और प्राणी नम्बरवार हैं। तो मनुष्य-सृष्टि का पहले उद्धार होता है। उत्+हर = ऊपर की ओर हरण करके ले जाता है। किसको? जानवर की आत्माओं को? नहीं! किसको? मनुष्य-आत्माओं को आत्मा का परिचय देकर ऊपर ऊँचे-ते-ऊँचे धाम की ओर ले जाता है। तो आत्माओं का पहले उद्धार होता है। उसके बाद जड़ सृष्टि का उद्धार होगा या नहीं होगा? जड़ सृष्टि महामृत्यु के समय तामसी बन जाती है या सात्विक होती है? (किसी ने कहा- तामसी होती है) पृथ्वी भूकम्प लाती है, जल सारी दुनिया में जलमयी कर देता है, वायु बड़े-2 तूफान लाती है और ऐसी आग बरसती है संसार में, सब भस्म हो जाते हैं।

तो देखो, पाँच तत्वों का जो संघात प्रकृति है, वो माया से भी ज़्यादा पावरफुल है। माया बड़ी चालाक है, उसने सोचा कि मैं तो नहीं जीत पाई, नहीं जीत सकती हूँ, तो क्या करूँ? प्रकृति से हाथ मिलाऊँ और उसको अपने कब्जे में कर लूँ। चेतन बुद्धि के द्वारा ही बरगलाया जाता है। तो वो जगदम्बा बरगलावे में आ जाती है और जगदम्बा ही वास्तव में दूसरा नाम है ब्रह्मा का। जगदम्बा जब तामसी बनती है, तो कौन मस्तक में दिखाया जाता है? अधूरा ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा दिखाते हैं महाकाली के मस्तक पर। ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा की सोल उसमें प्रवेश करके आत्मा का पार्ट बजाती है, करावनहार का पार्ट बजाती है और शरीर करनहार है।

तो (जब) सारी दुनिया में प्रलय हो जाती है। प्रलय = 'प्रकृष्ट रूप से (1 में) लीन' हो जाती है दुनिया। कैसे? जो पाँच तत्वों के शरीर हैं, वो दुनिया में ऐसा शरीर रह जाता है, जो सदा सत् है। पंचतत्व विनाशी हैं या अविनाशी हैं? (किसी ने कहा- विनाशी हैं) विनाशी हैं? पाँच तत्व को एलीमेण्ट कहा जाता है। एलीमेण्ट का कभी विनाश होता है? (किसी ने कहा- नहीं होता) रूप बदलता है; लेकिन विनाश तो नहीं होता है। तो पाँच तत्वों का एक ऐसा भी संसार में संघात है कि सारी सृष्टि का रूप दिखाई नहीं देता, बदल जाता है, अव्यक्त हो जाता है; लेकिन एक रूप व्यक्त रहता है। कौन? प्रजापिता, जिसको 'शंकर' नाम से बोला जाता है कि शंकर का कभी जन्म नहीं होता, कभी मृत्यु नहीं होती। वो ही शंकर मनुष्य-सृष्टि के झाड़ के चित्र के ऊपर दिखाया है। एक के अलावा सभी देह-अभिमानी मनुष्य-आत्माएँ, जिनका देहभान सौ परसेण्ट छूटता ही नहीं। जिसका छूटता है वो शिव समान (निराकार) बन जाता है, जिनका नहीं छूटता वो शिव समान नहीं बनतीं। तो जो शिव समान बन जाता है, उसी का नाम 'शिवलिंग' पड़ता है। वो ही शिवलिंग त्रिमूर्ति के चित्र में ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है, जिसमें निराकार भगवान का साकार बड़ा रूप लिंग भी है और छोटा रूप ज्योतिबिन्दु भी।

भगवान शिव बाप भी यही कहते हैं- मेरा छोटा रूप याद नहीं आता है, तो तुम क्या करो? बड़े रूप को ही याद करो। इस सृष्टि पर वो (मूर्तिमान महादेव शंकर) भी अविनाशी है। तो उसको याद करेंगे तो तुम अविनाशी बनेंगे या विनाशी बनेंगे? (किसी ने कहा- अविनाशी) तो कुछ विरली आत्माएँ हैं, जो निराकार को (सहज ही) खींच के याद करने में एक्सपर्ट बन पाती हैं। वो हैं मनुष्य-सृष्टि के अष्टदेव, स्थूल बीज, अलग-2 धर्मों के पूर्वज। 'पूर्व' माने पहले, 'ज' माने जन्म लेने वाले और एक और है, जो सबका पूर्वज है, आठों में भी पूर्वज है; लेकिन वो आठ भी जो शिव की अष्टमूर्तियाँ कही जाती हैं, (उनमें) एक ही रहता है और बाक़ी सब कुछ-न-कुछ टाइम के लिए परमधाम में पड़े रहते हैं, जड़त्वमयी हो जाते हैं। नम्बरवार उतरेंगे या एक साथ उतरेंगे? नम्बरवार उतरते हैं। तो जो पहला नम्बर है, अल्लाह अव्वलदीन जिसे कहा जाता है। अल्लाह माने ऊँचे-ते-ऊँचे ने अव्वल नम्बर दीन/धर्म की स्थापना की। वो एक ही धर्मपिता है, जो इस सृष्टि पर रहता है और उसका शरीर है, जड़त्वमयी पाँच तत्वों का बीज और जो उसकी आत्मा है, वो 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माओं की बीज मनुष्य-आत्मा है। वो मनुष्य-आत्मा जब उतरती है; एक सेकेण्ड में जाती है, एक सेकेण्ड में उतरती है, उससे भी कम; तो क्या करती होगी? पंचतत्वों की जो जड़त्वमयी सृष्टि है, उसके निर्माण का बाप है या नहीं? जड़-चेतन (दोनों) का बीज कौन है? जड़त्वमयी सृष्टि और चैतन्य सृष्टि, प्राणि-मात्र- उन दोनों का बीज कौन है? एक ही (महादेव) है ना! तो उससे ही सारा जगत निकलता है। जो झाड़ के ऊपर बैठा हुआ दिखाया गया है कि 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ कहाँ खिची चली जा रही हैं? कौन है मीडिया, जिसकी तरफ खिच रही हैं? 'शिवशंकर'। मनुष्य-गुरुओं ने नाम दे दिया है कृष्ण का- कृष्ण भगवान। वास्तव में है शिव-शंकर भोलेनाथ का कम्बाइण्ड रूप और उस स्वरूप में सभी प्राणि-मात्र की आत्माएँ मन्मनाभव होकर जाती हैं। 'मत्' माने 'मेरे', 'मना' माने मन में, 'भव' माने 'समा जा'। वो सारी 500/700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ उस बाप के मन में, मन के संकल्प में; क्या संकल्प है मन का? एक शिवबाबा दूसरा न कोई। वो बिन्दी को ही (शिव) बाबा समझती है। मुरली में क्या बोला? तेरी बुद्धि में बाबा कहने से बिन्दी ही याद आवेगी। "तुम शिवबाबा कहते हो तो बुद्धि निराकार तरफ ही चली जाती है। निराकार ही याद आता है।" (मु. 4.7.71 पृ.1 मध्य) बाकी सब-कुछ 'इच्छा मात्रम् अविद्या'। ये जो भी जड़-जंगम सृष्टि है, चैतन्य देखने में आते हैं या जो भी जड़त्वमयी सृष्टि है- पहाड़, समन्दर, नदियाँ, अलग-2 देश, वो सब क्या हैं? विनाशी हैं। उन सबका बीज एक लिंग है। वो सब अव्यक्त रूप में, बीज-रूप में समा जाते हैं। चैतन्य आत्माएँ भी समा गईं और सारे पाँच तत्व भी उस एक (शरीर) में समा गए; इसलिए कहा जाता है कि जो बाप है, वो बीज-रूप में जन्मदाता है और माता मूल अर्थात् आधार रूप में माता है। तो सारी सृष्टि का बाप कौन है? प्रजापिता कहो, वो अधूरा रूप है, पतित रूप है। वो पुरुषार्थ करके सम्पन्न बनता है तो ज्योति लिंग रूप बन जाता है, साकार सो निराकार बन जाता है।

वो साकार लिंग भी है और निराकार ज्योतिबिन्दु भी है; इसलिए गीता में उसको 'अव्यक्तमूर्तिना' कहा गया है। कैसी मूर्ति है? अव्यक्त भी है। अरे! अव्यक्त कहाँ? शिवलिंग देखने में नहीं

आता! जो देखने में आए वो व्यक्त, जो देखने में न आए वो अव्यक्त। तो क्या शिवलिंग देखने में नहीं आता? आता है! आता है? पूर्ण रूप से देखने में आता है? अरे, बिन्दु आत्मा और बिन्दु आत्माओं का बाप तो देखने की चीज़ वैसे भी नहीं हैं। तो शिवलिंग जो है, दिखाते हैं, वो सम्पन्न रूप पूर्ण रूप से देखने में आता है हर तरीके से? नहीं कि हाँ? अरे, दो बातों में से एक ही सत्य होगी ना! देखने में आता है या नहीं? (किसी ने कहा- आता है) आता है? उसके हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान साकार के दिखाई पड़ते हैं? इसीलिए निराकार है। इसीलिए अव्यक्त है। वो लिंग रूप अव्यक्त भी है, उसके हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान, कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ दिखाई नहीं देतीं; इसलिए अव्यक्त है, निराकार भी है, निराकारी स्टेज। (किसी ने कहा- साकार में आए तो...) माने उसको शरीर है कि नहीं? (किसी ने कहा- उनको शरीर नहीं) लिंग रूप को शरीर है या नहीं? (किसी ने कहा-है लिंग रूप) जिसकी पूजा होती है मंदिरों में, वो पूजा शरीरधारियों की होती है या निराकार ज्योतिबिन्दु की पूजा होती है? बाबा कहते, शिवबाप कहते- मेरी पूजा नहीं होती है। 'आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी', तो कौन पूज्य बनता है? तुम बच्चे ही पूज्य बनते हो, चलो शालिग्राम के रूप में रुद्रमाला के मणके पूज्य बनते हो। तो शालिग्राम के रूप में तुम्हारी पूजा होती है। तुम बच्चे ही लिंग रूप में, रुद्र-ज्ञान-यज्ञ का कोई-न-कोई बच्चा है जो बड़ा लिंग बनता है। बड़ा-2 लिंग बनाते हैं ना! किस बात की यादगार? पाण्डवों के बड़े-2 लम्बे-चौड़े चित्र बनाते हैं, महात्मा बुद्ध का बड़ा लम्बा-चौड़ा चित्र बनाते हैं। क्यों? बड़ा काम किया तो बड़ा चित्र बनाया। तो रुद्र-यज्ञ में लिंग बहुत बड़ा बनाते हैं; और छोटे-2 शालिग्राम, वो किसकी यादगार? आत्माओं की यादगार; और लिंग? (किसी ने कहा-बाप की) कौन-से बाप की, बेहद के बाप दो हैं? मनुष्य-सृष्टि के बाप की यादगार है। शिवबाप कहते हैं- मंदिर में भी तुम जो पूजा करते हो, वो मेरी पूजा नहीं करते। तुम आपे ही पूज्य बनते हो। चाहे शिवलिंग के रूप में पुरुषार्थ करके, निराकारी स्टेज धारण करके शिवलिंग बन जाते हो और चाहे तुम बच्चे देवताओं के रूप में निराकारी स्टेज, बिन्दु-रूप धारण कर लेते हो। वो देवताओं की पूजा भी तुम्हारी पूजा है और लिंग-रूप में भी जो पूजा है, वो भी तुम्हारी पूजा है, मेरी पूजा (किसी ने कहा- नहीं है)। मेरे को तो याद कर सकते हो। ओम शांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV
@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025